



unicef 
for every child



कोविड-19

भेदभाव और अपमान के
खिलाफ बच्चों की जंग

बच्चों द्वारा की गई
एक पहल

अइय्यो!
तुमने हमारे पड़ोसी के दरवाजे पर
लगे उस पोस्टर को देखा? हर
कोई उनके गलत कामों के बारे में
बात कर रहा है।

क्या
अम्मा??

ये लोग विदेश से
लौटें हैं!
तुम इनके साथ ज्यादा
घुलना मिलना नहीं।
उन्हें जानलेवा कोरोना
वायरस है!

क्या ये लोग खतरनाक है।

अरे! अप्पा अम्मा,
मुझे लगता है ऐसा करना सही नहीं है!
मैंने टीवी पर सुना है और अखबार में भी
पढ़ा है कि घबराने की कोई बात नहीं है।
कोरोना वायरस बीमारी या COVID-19
यह हर उम्र के लोगों को बिना उनका
स्थान, भाषा, जाति और धर्म को जानें,
संक्रमित कर रहा है। हमें एक दूसरे के
साथ प्यार और दया के साथ व्यवहार
करना चाहिए क्योंकि इसमें हम
सब एक साथ हैं।



भेदभाव करना गलत है



लोगों को यह जानने कि ज़रूरत है कि कोरोना वायरस किसी भी इंसान को संक्रमित कर सकता है। लोगों के साथ उनकी जाति, व्यवहार, खाने की आदत या उनके व्यवसाय को लेकर भेदभाव करना या उनका अपमान करना गलत है। बहुत से लोग डर के कारण वायरस होने पर भी नहीं बताते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि कहीं उन पर "यही है वो जिसे कोरोना वायरस है" का लेबल न लग जाए। ऐसा होने पर हम सभी को खतरा हो सकता है। हमें अपने पालतू जानवरों के साथ भी नम्रता दिखानी चाहिए। यह समय सिर्फ मानवता और दया दिखने का है। गलत सूचना और गलतफहमियों को दूर करना हमारी जिम्मेदारी है।

COVID-19 के कारण कौन-कौन भेदभाव का सामना कर रहा है?



कुछ समुदाय के लोग दूसरों की तुलना में ज्यादा भेदभाव का सामना कर रहे हैं।



दूसरे देशों के लोगों को भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है।



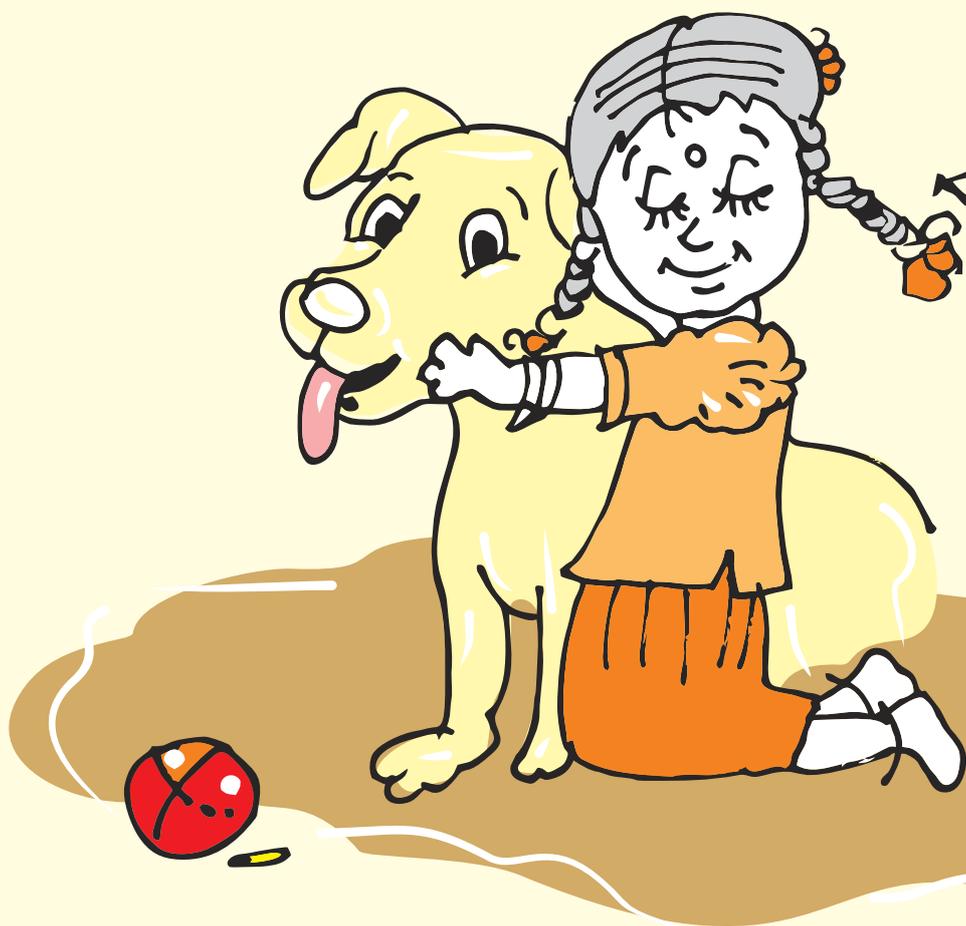
फ्रंटलाइन प्रोफेशनल्स जैसे डॉक्टर, नर्स, सहायक डॉक्टर्स-नर्सज, सेनेटरी कर्मचारी, आदि को अपमान और भेदभाव सहना पड़ रहा है।



लोगों को उनके खाने की आदतों से आंका जा रहा है।



यहां तक कि, कुछ लोग अपने पालतू जानवरों का साथ छोड़ रहे हैं क्योंकि उन्हें यह गलतफहमी है कि पालतू जानवर COVID-19 फैला सकते हैं।



ओह...
मुझे अपने पालतू जानवर से बहुत प्यार है।
और हाँ! इसे कोरोना नहीं है।
यह मेरा स्ट्रेस बस्टर है।
आजकल, यही मेरा खेल का साथी है।

जैसे WHO कहता है, अभी तक पालतू जानवर जैसे कुत्ते और बिल्ली से इंसानों में कोरोना वायरस फैलने का कोई सबूत नहीं है।

यह समय है एक दूसरे की मदद करने का और एक दूसरे से जुड़े रहने का



जो लोग भेदभाव का सामना कर रहे हैं,
उनके लिए खड़े हों।

जब हम घर पर हों, तब भी सुनिश्चित करें कि हम लोगों की देखभाल करते रहें। हमें ध्यान रखना चाहिए कि परिवार के लोग, दोस्त, सहयोगी, समुदाय और लाखों भारतीय चाहे उन्हें हम न जानते हों, लेकिन उनका जीवन भी बहुत कीमती है।

अपने आसपास के बुजुर्गों
की मदद करें।

कठिन समय में हमें एकजुट होकर एक दूसरे की मदद करने की ज़रूरत होती है। अपने बड़े बुजुर्गों की उनके छोटे-मोटे कामों में मदद करें जो कि अब उनके लिए कर पाना बहुत मुश्किल हो जाएगा, जैसे- बाहर से कुछ सामान लाना, यह कर के वे आपसे हमेशा जुड़े रहेंगे।



नमस्ते



दुकान



सबके साथ नम्रता और
प्यार से रहें।

जब आप खाना और दवा जैसी ज़रूरी चीज़ें खरीदने घर से बाहर जाएं, तो बाहरी लोगों के साथ विनम्रता से पेश आएं। बिना कोई संपर्क बनाए उन्हें नमस्कार करें। ऐसे समय में, थोड़ी सी भी नम्रता एक लम्बा रास्ता दिखा सकती है।



गलत सूचना और अफवाहें अपमान और भेदभाव का कारण बनती हैं



अइय्यो, अप्पा अम्मा आप लोग ये सब बंद करें!

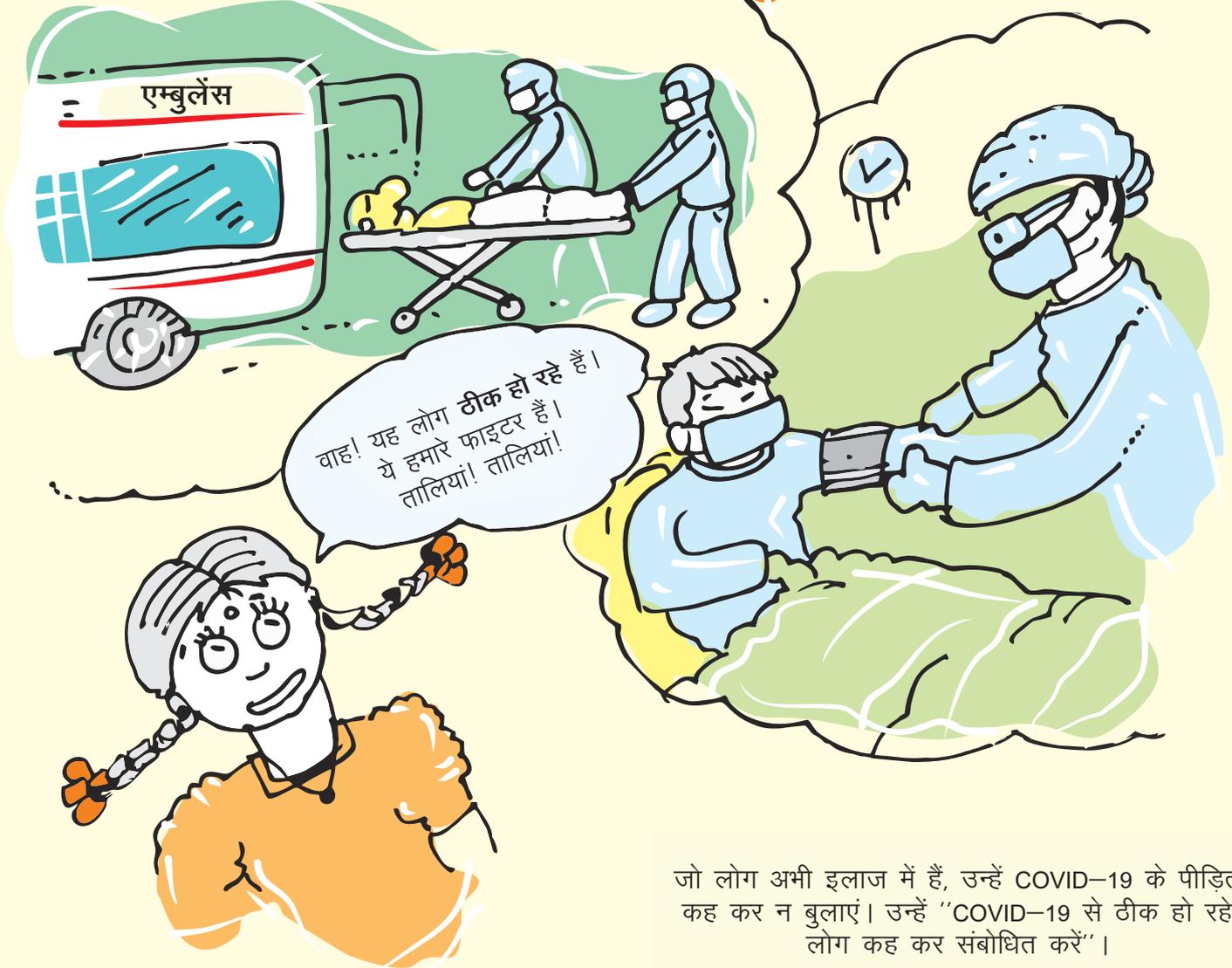
ऐसे अनिश्चित समय में, अफवाहें लोगों के मन में डर और दहशत फैला सकती हैं। ज़िम्मेदार बनें और यह सुनिश्चित करें कि जो जानकारी आप और लोगों को भेज रहे हैं वो सही है और एक विश्वासनीय साधन जैसे MoHFW, WHO, UNICEF आदि द्वारा आई हो।

लोगों के साथ COVID-19 की सकारात्मक कहानियां साझा करें। बीमारी से प्रभावित व्यक्ति या क्वारंटीन किए गए व्यक्तियों या उनके इलाके के नाम या पहचान सोशल मीडिया पर न फैलाएं।

गलत सूचना फैलाने से बचें।



दरवाजे पर स्टिकर का मतलब यह नहीं है कि उनके अंदर वायरस है। स्टिकर में कहा गया है कि लोग अपने यात्रा के इतिहास, नौकरी या सामाजिक दायरे के कारण घर में क्वारंटीन हैं। ज़रूरी नहीं कि वे संक्रमित हों। इसके अलावा क्वारंटीन केवल दिए गए समय के लिए ही है।



वाह! यह लोग ठीक हो रहे हैं।
ये हमारे फाइटर हैं।
तालियां! तालियां!

जो लोग अभी इलाज में हैं, उन्हें COVID-19 के पीड़ित कह कर न बुलाएं। उन्हें "COVID-19 से ठीक हो रहे लोग कह कर संबोधित करें"।

उन लोगों को प्यार और सम्मान दें जो इस कठिन समय में कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वे यहां हमारी मदद करने के लिए हैं।



ऐसे समय में ज़रूरी सेवाएं देने वालों की सराहना करें और उनके परिवारों का भी समर्थन करें।



उन्हें "धन्यवाद" कहें। वे हमारी सुरक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं।

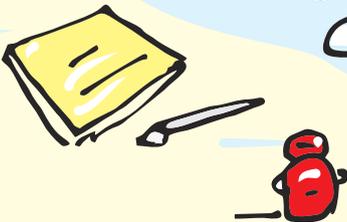
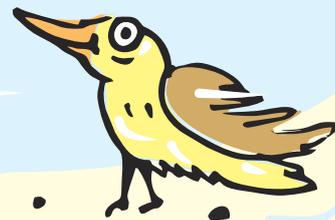


COVID-19 किसी को भी नसल के नाम पर भेदभाव करने का बहाना नहीं है। यह वायरस किसी भी इंसान का धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा इत्यादि देख कर नहीं आता है।



अनेकता में एकता ही
हमारी ताकत है।

यह पूरी दुनिया के लिए एक
महामारी है, इसलिए हम सब को
एकजुट होकर इस बीमारी से लड़ने
की ज़रूरत है ताकि आने वाला
समय हमारे लिए अच्छा रहे।



बच्चों द्वारा की गई इस पहल के बारे में

इंकलिंग चैरिटेबल ट्रस्ट ने UNICEF राज्य कार्यालय के साथ साझेदारी में तमिलनाडु और केरल के लिए बच्चों को ध्यान में रखकर COVID-19 के ऊपर इस पुस्तक को बनाया है। यह पुस्तक एक नाटक के तरीके से बनाई गई है। जिससे कि लोगों में डर और चिंता कम हो और वो लोग जिनके साथ अपमान और भेदभाव हो रहा है या जो COVID-19 से प्रभावित हैं, उनके बारे में बच्चों को बता सकें।

ऑनलाइन अभिविन्यास के माध्यम से कला और रचना को ध्यान में रख कर बच्चों द्वारा कुछ चित्र बनाए गए हैं, जिसमें इंकलिंग ने डिजिटल तरीके से बच्चों का मार्गदर्शन किया गया है। बनाए गए चित्र और कहानी को भी डिजिटल तरीके से इंकलिंग की युवा रचनात्मक टीम द्वारा अंतिम रूप दिया गया है।



unicef 
for every child